हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श

डॉ सुनीता.रा. हुन्नरगी हिंदी विभाग के .एल. ई. संस्था के जी.आय. बागेवाडी कला विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय निपाणी। ई.मेल:-hunnaragisunita@gmail.com

---

शोधसार :-

स्त्री विमर्श अर्थात स्त्री से जुड़े किसी विषय पर विचार विमर्श करना। इसे साहित्यिक आंदोलन भी कहा जाता है। स्त्री विमर्श को अंग्रेजी में फेमिनिज्म कहते हैं। "स्त्रीवाद फेमिनिज्म का अर्थ ऐसा विश्वास या सिद्धांत कि स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिए।"[1] विमर्श शब्द की व्याख्या-"यहां विमर्श शब्द का अर्थ होता है अभिव्यक्ति के उन तत्वों या पहलुओं की संरचना जो कुल जोड़ से भी परे जाकर कोई खास अर्थ देने की क्षमता रखते हो।"[2] इस प्रकार विमर्श से तात्पर्य हुआ कि किसी समस्या पर एक निश्चित दिशा में विचार न करके उससे संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों मानसिकताओं और विचारों का समग्र अध्ययन करना। अतः विमर्श से तात्पर्य है कि विचार करना विनिमय तथा विवेचन से है। आज साहित्य जगत में सर्वाधिक चर्चा स्त्री विमर्श की हो रही है। स्त्री समकालीन युग में प्रमुख विषय है।हिंदी साहित्य में करीब दो-तीन दशक से ही स्त्री विमर्श पर चिंतन मनन हो रहा है । सदियों से ही स्त्री पर शोषण होते हुए हम देखते आए हैं ।आज स्त्री का अस्तित्व है कि स्त्री चेतना ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिया है । स्त्री को हमेशा पूजनीय, वंदनीय माना जाता है। स्त्री विमर्श का तात्पर्य है कि समानाधिकारिणी ,आत्मसम्मान,आत्मगौरव ,आत्मबल, समता ,आत्म चेतना का ही दूसरा नाम है । यह वैचारिक आंदोलन किसलिए ? आज की स्त्री मुक्त स्वतंत्रता चाहती है। वह पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर कार्य करना चाहती है। वह इस हक की अधिकारिणी भी है ।आज की स्त्री आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैचारिक क्षेत्रों में समान अधिकारों की मांग कर रही है। वह हर क्षेत्र में अपना कदम बढ़ाना चाहती है । सच तो यह है कि स्त्री अपने अस्तित्व की खोज में है । स्त्री विमर्श में स्त्री की स्वतंत्रता ही मूल विषय रहा है। स्त्री विमर्श के कारण ही स्त्रियों के जीवन में बहुत ही परिवर्तन होते दिखाई देते हैं।

आज स्त्रीयां शक्तिशाली बन रही है। जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकती है, और परिवार ,समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनना है । इसमें ऐसी ताकत है कि समाज और देश में बहुत कुछ बदल सकता है।

बीज शब्द :- स्त्री विमर्श ,हिंदी साहित्य, स्त्री विमर्श वैचारिक आंदोलन

मूल आलेख :-

प्राचीन काल से ही यह पंक्तियां पढ़ते हुए और सुनते हुए आए हैं," यत्र नार्यस्तु पूज्यतें रमंते तत्रं देवता।" अर्थात समग्र सृष्टि ही नारी है। स्त्री का पूर्ण स्वरूप मां, पत्नी, बेटी, बहन से होता है। ईश्वर ने जब सृष्टि की रचना की होगी तो इस सारे खेल को रचने से पूर्व उनके दिमाग में स्त्री और पुरुष दो रूपों का चित्र ही उभरा होगा, इस चित्र ने ही शायद उन्हें सृष्टि रचना को प्रेरित किया हो । ऐसी कल्पना इसलिए की जा सकती है क्योंकि इन दोनों रूपों के बिना शायद कोई बड़े से बड़ा कल्पनाशील व्यक्ति सृष्टि की कल्पना भी नहीं कर सके। अतः स्त्री को हमेशा पूजनीय स्थान देना है।

साहित्य के क्षेत्र में सिर्फ पुरुष ही नहीं बल्कि स्त्री रचनाकार भी प्रभावी रचनाओं के द्वारा पाठकों को आकर्षित करती है। हिंदी में स्त्री लेखन की बात की जाए तो वह सिर्फ आधुनिक काल में उठ खड़ा हुआ कोई विशिष्ट लेखन तो नहीं है।"यों साहित्य में स्त्री विमर्श की बात कर तो हमें अपने उन तमाम धार्मिक और सामाजिक काव्यों तथा काव्य ग्रंथों के पन्ने पलटने होंगे जिनमें सामाजिक छलनाओं के खिलाफ स्त्री का विद्रोह है मौनवत या कि किसी -न- किसी घटनाक्रम से उजागर हुआ है। इसे हम अहिल्या के सवालों में भी देख सकते हैं और भूमिगत होती सीता द्वारा राम के नाम सवालों में भी। यानी कि जिस स्त्री विमर्श के नाम पर सब आज इतना बवाल मचाए हैं वह हमारे पुरखे रचनाकार पहले से ही गा गए हैं।"[3]

समाज आधुनिक युग की ओर बढ़ रहा है परंतु स्त्री की कभी प्रशंसा नहीं की गई। कभी सम्मान नहीं दिया गया। हमारा समाज पुरुष वादिता या पितृसत्तात्मक है। आज भी स्त्री को अपने अधिकार के लिए संघर्ष करना पड़ता है । स्त्री के आवाज को कभी ध्यान से सुना नहीं गया वह अपने अधिकार,अस्तित्व और अस्मिता के लिए लड़ रही है।

"भारतीय भाषाओं में समय-समय पर स्त्री सशक्तिकरण व स्त्रियों के अस्तित्व संबंधी विषयों पर रचनाएं रची गई है। कहा जाता है कि फेमिनिज्म का आविर्भाव पश्चिम में हुआ था। हिंदी साहित्य क्षेत्र में 1975 के बाद इसकी शुरुआत हुई। साहित्य में स्त्री विमर्श का सबसे पहला कार्य स्त्री की चेतना का विकास है। लिंग की अवधारणा इतिहास की दृष्टि से सबसे अधिक 20 वीं शताब्दी में उभरी है।"[4]

स्त्री विमर्श एक वैचारिक आंदोलन है। यह आंदोलन स्त्रियों के अधिकारों की मांग करती है। स्त्री को अपने अस्तित्व के बोध से ही विमर्श की प्रेरणा मिली है। प्राचीन काल से ही स्त्री को चार दिवारी के बाहर आना मना था , क्योंकि पुरुष प्रधान संस्कृति अब समय के साथ-साथ हर स्त्री अपनी अधिकारों के प्रति सचेत हुई है । स्त्री अब आधुनिक युग में अपना स्वतंत्र अस्तित्व, स्वतंत्र व्यक्तित्व और स्वतंत्र निर्णय लेना चाहती है। उसकी अपनी आत्मस्थैर्य ,आत्मबल उसकी अपनी अस्मिता की पहचान है। डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के अनुसार स्त्री विमर्श और, और कुछ नहीं अपने 'अस्मिता की पहचान' 'स्व 'की चिंता ,अस्तित्व बोध और अधिकार को जतलाने और बतलाने का विचार चिंतन है। "[5]

सिर्फ हम समाज में ही स्त्री की समस्याओं को वेदनाओं को नहीं देखेते बल्कि साहित्य की अन्य विधाओं में भी स्त्री विमर्श की लहरें दिखाई देती है। समाज ने हमेशा स्त्री को वेदना घुटन दुख देना ही समझा है अर्थात वह हमेशा पीड़ा को भोगते आई है, पुरुषों के आगे अपने आप को समर्पित करें वह सामान्य के अधिकार नहीं है। आज स्त्री की आवाज बुलंद होती दिखाई देती है। स्त्री की आवाज से ही पूरी नींव हिल जाती है, पूरा परिवर्तन हो जाता है । हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का साहित्य में आविर्भाव एक प्रकार से पुरुषसत्तात्मक और पितृसत्तात्मक समाज के लिए चुनौती है।

समाज और साहित्य एक दूसरे के पूरक है। दोनों को अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि साहित्य में समाज का रूप प्रतिबिंबित होता है। आज साहित्य में सर्वाधिक चर्चा दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, बाजार विमर्श, किन्नर विमर्श, स्त्री विमर्श, पर्यावरण विमर्श किसान विमर्श इन विषयों पर ही चर्चा हो रही है।अतः इनमें दलित विमर्श, स्त्री विमर्श पर अधिक चर्चे हो रहे हैं।

हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श :-

स्त्री के प्रति आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल के कवियों ने हिंदी साहित्य में अपना योगदान दिया है । धीरे-धीरे हर विधा में साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई है, इससे साहित्य में वृद्धि हुई है । आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्य में स्त्री का जिक्र सर्वत्र बखूबी देखा जा सकता है। सिर्फ समाज के लोगों में ही नहीं साहित्य की तमाम विधाओं में भी स्त्री विमर्श की झलक दिखाई देती है। इसका हम अनुमान लगा सकते हैं कि स्त्री की मुक्ति के लिए साहित्य का भी सदा योगदान रहा है।

साहित्य में स्त्रीवादी लेखन को समझने के लिए सिर्फ स्त्रियों की रचनाएं देखना उचित नहीं है, स्त्री को मुख्य रूप से चित्रित करने वाले पुरुष और स्त्रियों द्वारा रचित रचनाओं को समुचित रूप से परखना होगा स्त्री को प्राचीन काल से ही साहित्य में गरिमा प्राप्त है।

वैदिक काल से आधुनिक काल तक स्त्री को समाज तथा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। भारतेंदु काल से लेकर आधुनिक काल के रचनाकारों ने ,कवियों ने ,स्त्री को चित्रित किया है। साहित्य में किसी न किसी रूप से स्त्री की उपस्थिति हुई है। स्त्री के अनेक रूप जैसे पीड़ा शोषण का षड्यंत्र ,अस्तित्व तथा यथार्थ का चित्रण हुआ है। अधिकतर साहित्यकारों ने स्त्री की समस्याओं, सामाजिक विसंगतियों को जैसे स्त्री शिक्षा विधवा विवाह ,बहु विवाह ,बाल विवाह, अनमेल विवाह, प्रेम विवाह आदि का चित्रण बहुत सटीक शब्दों से किया है।

प्रगतिवादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने नारी के आर्थिक सामाजिक विषम स्थितियों में पुरुषों के साथ दिन-रात परिश्रम करती है । तोड़ती पत्थर कविता में ऐसे ही नारी का चित्रण किया गया है।

"वह तोड़ती पत्थर देखा उसे मैं इलाहाबाद के पथ पर गुरु हथौड़ा हाथ करती बार-बार प्रहार सामने तरु मालिका अट्टालिका प्राकार।"[6]

वह तोड़ती पत्थर कविता में कवि सूर्यकांत त्रिपाठी ' निराला' ने श्रमिक नारी की कठिनाइयों और संघर्षों को दिखाया है । यह कविता मजदूर वर्ग की दयनीय स्थिति को उभरनेवाली एक मार्मिक कविता है इस कविता में समाज में महिलाओं के योगदान का वर्णन है।

कवयित्री डॉ विदुषी शर्मा ने भारतीय नारी के गुणों का बखान करते हुए उसे सम्मान नजरों से देखे जाने का आव्हान किया है। कविता में सौंदर्य ,वैदुष्य और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति गार्गी, विद्योतमा ,रंभा और शकुंतला को कहा है। नारी ही सृष्टि का आधार है तो वह प्रकृति का श्रृंगार भी है । यही नहीं नारी के संदर्भ में कवयित्री ने सबसे अच्छी पंक्ति कही है दो घरों की लाज है नारी।

"सृष्टि का आधार है नारी ,प्रकृति का श्रृंगार है नारी नारी है तो प्रेम है, बंधन है, हर रिश्ते की डोर है नारी।

नारी को सरल ना समझो, ईश्वरत्व का मिश्रण है नारी हम खुद अपना सम्मान करें और मान करे हम है नारी।"[7]

इस प्रकार यह कविता नारी के संदर्भ में बहुत ही श्रेष्ठ भाव को हमारे समक्ष प्रदर्शित करती है।

हिंदी साहित्य में गद्य विधाओं में कहानी विधा अत्यधिक गंभीर रुप से विकसित हुई है ।अन्य विधाओं के पाठकों की तुलना में कहानी के पाठक संख्या में अधिक है हिंदी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में नारी मुक्ति को सरोकार बनाने की कोशिश हमेशा से ही करते आए हैं आरंभिक तथा साहित्य में बंग महिला, यशोदा देवी, प्रिया मुंडा देवी शारदा कुमारी आदि नाम महत्वपूर्ण है। बंग महिला राजेंद्रबाला घोष ने तीन कहानियां लिखी दुलाईवाली, भाई-बहन ,हृदय परीक्षा, दुलाईवाली तत्कालीन स्त्री जीवन पर आधारित है ।शिवरानी देवी की कहानी मुख्यतः पुरुषों के अधीन रहनेवाली अत्याचारों से पीड़ित स्त्रियों का बयां करती है। सुभद्रा कुमारी चौहान जी ने भी अपनी कहानियों में स्त्री को पर्याप्त मात्रा में जगह दी थी नारी की व्यवस्था तथा आदि पर उन्होंने कहानी लिखी ।इस पीढ़ी के बाद स्त्री अस्मिता पर लिखनेवाली अन्य कथाकारों में कृष्णा सोबती ,मन्नू भंडारी, नमितासिंह ,रमणिका गुप्ता, नासिरा शर्मा ,अलका सरावगी, सुशील ताखोर ,चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मैत्रीयी पुष्पा आदि नाम इस कालखंड में आते हैं। इसी तरह मन्नू भंडारी जी के कहानियों में अकेली, सजा चाहिए ,तीसरा आदमी, आदि कहानियों में नारी के अंतर दोनों को चित्रित किया गया है ।जया जादवानी की कहानी पलाश के फूल कहानी की नायिका अपूर्व भी स्त्री मुक्ति की कामना करती है।"मुझे इसलिए मुक्ति चाहिए.... इन सबसे.... और तुमसे भी। तुम मेरे सपनों के पुरुष नहीं हो पुरुष वह होता है, जो कुछ दे कुछ ले। तुम ना दे सकते हो ना ले सकते हो।"[7] स्त्री अपनी सारी जिंदगी की मुसीबतों को झेलती और इस तरह सोचने के लिए मजबूर हो जाती है।

समकालीन कहानियों में स्त्री का चित्रण किया जा रहा है ।हिंदी नाटकों में प्रसाद जी ने अजातशत्रु नाटक में सहपत्नी विधवा जीवन वेश्यावृत्ति पर लिखा है। प्रसाद जी ने ध्रुवस्वामिनी स्त्री समस्याओं का चित्रण किया है। लक्ष्मी नारायण मिश्र द्वारा लिखित है सिंदूर की होली ,सन्यासी, रक्षा का मंदिर, राजयोग आदि नाटकों में स्त्री संघर्ष प्रेम त्याग नई समस्याओं का चित्रण है ।हरे कृष्णा प्रेमी जी ने रक्षाबंधन नाटक में सांप्रदायिकता के खिलाफ खड़ी होने वाली स्त्री का चित्रण किया है। उपेंद्रनाथ अश्क जी ने उड़ान में नारी स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति दी है। समकालीन नाटकों में भी स्त्री पर उसकी जिंदगी पर नाटकों की रचना हो रही है।

हिंदी उपन्यासों में स्त्री का चित्रण कई रूपों में मिलता है इनमें स्त्री की समस्याएं उनके संघर्ष और उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू शामिल है उषा प्रियंवदा और शिवानी जैसे लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में स्त्री की प्रतिष्ठा और उसके संघर्ष को दिखाया है।

स्त्री आत्मकथा की स्त्री वह है जो इतिहास द्वारा वांछित है, उसके यातना के इतिहास के वर्षों से दबाया गया है। इस दर्द को लेखिका होने अवसर पाकर शब्दबद्ध किया है। हिंदी में प्रकाशित पहले स्त्री आत्मकथा जानकी देवी बजाज की 'मेरी जीवन यात्रा' है। परंतु इस विषय पर कई विवाद हुई सरला एक विधवा की आत्म जीवनी पहली आत्मकथा है।

विश्व और 21वीं सदी में कई प्रसिद्ध लेखिकाएं अपनी आत्मकथाओं के साथ प्रस्तुत हुई है ।कस्तूरी कुंडल बसै, गुड़िया भीतर गुड़िया, (मैत्रींयी पुष्पा) पिंजरे की मैना ,(चंद्रकिरण सौनरेक्शा), बूंदबावड़ी ,(पद्मा सचदेव') अन्या से अनन्या '(प्रभा खेतान) हादसे (रमणिका गुप्ता) लगता नहीं है दिल मेरा (कृष्णा अग्निहोत्री) एक कहानी यह भी (मन्नू भंडारी) अमृता प्रीतम की' रसीदी टिकट' कमला दास की 'माई स्टोरी' चर्चित आत्मकथाएं हैं। रमणिका गुप्ता जी की आपुहुदरी आत्मकथा। स्त्री आत्मकथा एक ऐसी गंभीर विधा है जिसके द्वारा पाठक लेखक वर्ग आपस में जुड़ते हैं

उषा प्रियंवदा और शिवानी जैसे लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में स्त्री की प्रतिष्ठा और उसके संघर्ष को दिखाया है. वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नारी के कई रूपों को दिखाया गया है. जैसे, 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में लक्ष्मीबाई को आदर्श पत्नी और माता के रूप में दिखाया गया है ।आपका बंटी' जैसे उपन्यासों में परिवारों को लेकर स्त्रियों का चित्रण किया गया है। उषा प्रियंवदा के 'पचपन खंबे लाल दीवारें ,'रुकोगी नहीं राधिका' ,'शेष यात्रा' कृष्णा अग्निहोत्री के बात एक औरत की,' कुमारीकाएं मृणाल पांडे का 'विरुद्ध' सुनीता जैन का 'बिंदु 'सूर्यबाला का 'मेरे संधि पत्र' कुसुम अंसल का 'उसकी पंचवटी ' मंजुल भगत के 'अनारा' 'तिरछी बौछार' दीप्ति खंडेलवाल का' प्रिया', 'कोहरे' 'प्रतिध्वनियां' ,नमिता सिंह का 'अपनी सलीबे' आदि।

21वीं सदी में भी कई स्त्री लेखिकाओं द्वारा स्त्री जीवन की सच्चाई को उजागर करने की कोशिश की जा रही है । इन लेखिकाओं का मकसद सिर्फ हंगामा खड़ा करना नहीं है बल्कि स्त्री को समाज में साहित्य में हर जगह प्रदान करना तथा उसे पुरुष के समान अधिकार दिलाना ही है।

निष्कर्ष:-

हिंदी साहित्य में नारी जीवन की अनेक महत्वपूर्ण बातों को बखूबी से चित्रित किया गया है। साहित्यकारों ने स्त्री जीवन को बदलते परिवेश में उसकी बदलती चेतना के साथ अपनी रचनाओं में स्थान दिया है । वैदिक काल से लेकर समकालीन

महिला लेखिकाओं ने नारी की ग्रंथियों को बड़ी ईमानदारी से चित्रित किया है, और अपने लेखन के द्वारा स्त्री अब जागृत हो चुकी है वह सब अपने हक से पीछे रहने वाली नहीं है ।अतः हमें स्त्री का सम्मान करना चाहिए उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए नारी करुणा की प्रतिमूर्ति है। 21वीं सदी नारी जीवन में सुखद संभावनाओं की सदी है। आज की नारी जागृत और हर कार्य में सक्रिय हो चुकी है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1) डॉ सुरेश कुमार व रामनाथ सहाय, अंग्रेजी- अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश ,ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 2008 पृ. सं -437
2) अभय कुमार दुबे,आधुनिकता के आईने में दलित, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2014 पृसं-413
3) सं.हेतु भारद्वाज पंचशील शोध समीक्षा(वॉल्यूम -5) जुलाई- सितंबर 2009 पृ.सं-51
4) सं.हेतु भारद्वाज पंचशील शोध समीक्षा (वॉल्यूम -5) जुलाई- सितंबर 2009 पृ.सं-52
5) विमर्श के विविध आयाम डॉ अर्जुन चौहान पृ सं -29
6) पद्य परिमल सं. डॉ राजेंद्र पोवार पृ-28 सं
7) सं.हेतु भारद्वाज पंचशील शोध समीक्षा (वॉल्यूम -5) जुलाई- सितंबर 2009 पृ सं-61